11

प्राथमिक शिक्षक के अपेक्षित गुण एवं कौशल

मोइनुद्दीन खान*

प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक युवा विद्यार्थियों के विकास में बेहद महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। छोटी उम्र में बच्चों का दिमाग किसी स्पंज की तरह होता है, जो जीवन के कई अलग-अलग आयामों से ज्ञान ग्रहण करता है। शिक्षक की एकमात्र दायित्व कक्षा में बच्चों को केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं है। जब बच्चों के विकास में योगदान देने की बात आती है तो शिक्षक माता-पिता के बाद दूसरे स्थान पर आते हैं। वे बच्चों के नैतिक मूल्यों के विकास में अत्यधिक सहायता करते हैं। वे न केवल उनकी शैक्षिक पृष्ठभूमि का मूल्यांकन करके शिक्षकों की तलाश करते हैं, बल्कि यह भी देखते हैं कि वे बच्चों के विकास में क्या योगदान दे सकते हैं। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* प्राथमिक स्तर के शिक्षकों की तैयारी पर विशेष बल देती है। यह क्षेत्र राष्ट्रीय शिक्षा नीति का केंद्र बिंदु जान पड़ता है, जोकि समय की माँग भी है। प्राथमिक शिक्षा, विद्यार्थी के जीवन की आधारशिला है और इसे सँवारने वाले शिल्पकार प्राथमिक शिक्षक ही हैं। अत: अपने उत्तरदायित्वों को निभाने के लिए समय-समय पर उनका प्रशिक्षण अतिआवश्यक है। ऐसे में आवश्यक हो जाता है कि उनके सेवापूर्ण व सेवाकालीन प्रशिक्षण पर विशेष बल दिया जाए। प्रस्तुत लेख में प्राथमिक शिक्षक, उनके विशेष अपेक्षित गुणों और उन गुणों के विकास की महत्ता पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक— बच्चों में अच्छे गुणों के संवाहक

बच्चों में संस्कार व मूल्यों के विकास के लिए धैर्य, समर्पण और विस्तार पर दृष्टि रखने की आवश्यकता होती है। विकासशील मस्तिष्क को सही और गलत के बीच अंतर समझने के लिए सशक्त बनाने में शिक्षक मार्गदर्शक और संरक्षक की श्रद्धेय भूमिका निभा रहे हैं। उन्हें बच्चों को वांछनीय गुण सिखाने का काम सौंपा गया है। दरअसल वे विविध प्रकार के कार्य कर रहे हैं—

संसाधन केंद्र— प्राथमिक शिक्षक द्वारा निभाई जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण भूमिका अपने बच्चों के लिए एक विश्वसनीय संसाधन केंद्र बनना है। यह काफी सामान्य बात है कि बच्चे अनेक वस्तुओं के बारे में जानकारी पाने के लिए शिक्षकों के पास जाते हैं। प्रासंगिक जानकारी प्रदान करना और बच्चों को जानकारी का सर्वोत्तम उपयोग करने के लिए मार्गदर्शन करना शिक्षक का दायित्व है। उन्हें स्वयं को हर समय उपलब्ध रखना चाहिए, ताकि बच्चे आवश्यकता पड़ने पर उनसे परामर्श ले सकें।

**व्याख्याता,* जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, नूरसराय, नालंदा, बिहार 803 113

निरंतर समर्थन— अपने विकासशील चरण में, बच्चों को नए कौशल प्राप्त करने या अधिक जानकारी सीखने के दौरान समर्थन और सहायता की आवश्यकता होती है। जब भी बच्चों को ऐसी सहायता की आवश्यकता होती है, तो विश्वसनीय समर्थन के रूप में कार्य करते हुए, शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वे नेता, प्रशिक्षक और परामर्शदाता जैसे विभिन्न रूपों में उचित समर्थन लेकर सामने आएँ।

सजग दृष्टि— प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक पूरी तरह से कक्षा के प्रभारी हैं। उन्हें यह अवलोकन के केंद्र बिंदु में लाना होगा कि बच्चे क्या करते हैं, वे कैसे बोलते और व्यवहार करते हैं। विद्यार्थी-केंद्रित तरीके से ज्ञान प्रदान करते समय, शिक्षक को बच्चों के समुचित विकास के लिए पूर्ण अवसर देने चाहिए। यह सुनिश्चित करते हुए कि बच्चे नियमों का पालन करें, उन्हें मित्रवत और सहयोगी बने रहना चाहिए।

गुरु— निस्संदेह, शिक्षक की प्रमुख भूमिका बच्चों के गुरु की होती है। शिक्षकों के कई दायित्व में से, बच्चों को शिक्षा देना प्राथमिक है। बच्चों की व्यक्तिगत क्षमताओं के अनुसार पाठ्यक्रमों को तैयार करना और शिक्षण सामग्री की योजना बनाना अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षकों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि बच्चों को अपनी गति से और उनके ध्यान अवधि के अनुरूप सीखने की अनुमति दी जाए।

बच्चों के सीखने की प्रक्रिया का आकलन व मूल्यांकन— यह जाँचना कि बच्चें कैसा प्रदर्शन करते हैं, उन्हें सुधारना और आवश्यक प्रतिक्रिया प्रदान करना आदि प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की मुख्य रूप से महत्वपूर्ण कार्यक्षमताएँ हैं। बढ़ते बच्चों के साथ घूमने से शिक्षकों को प्रत्येक बच्चे के अद्वितीय गुणों और क्षमता की समझ होती है। बच्चों का श्रेणीकरण करना और उन्हें सुधारना शिक्षकों की महत्वपूर्ण दायित्वों में से एक है।

पाठ्यचर्या एवं कार्यक्रमों का आयोजन— प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक द्वारा निभाई जाने वाली आवश्यक और चुनौतीपूर्ण भूमिकाओं में से एक बच्चों की अध्ययन सामग्री और शिक्षा और समग्र विकास से संबंधित गतिविधियों का आयोजन करना है। गतिविधियाँ स्थापित करना, बच्चों के साथ शामिल होना और संलग्न होना एवं वस्तुओं का प्रदर्शन करना इस भूमिका के अंतर्गत आता है।

प्राथमिक विद्यालय शिक्षक— बच्चों के समग्र विकास में योगदान

आज बहुत से विद्यालय हैं, जो ऐसे शिक्षकों को नियुक्त करते हैं, जिनके पास अच्छे पारस्परिक और सामाजिक कौशल हों। ऐसा इसलिए है, क्योंकि वे बच्चों को ऐसे कौशल प्रदान करना चाहते हैं, जिससे बच्चे जीवन के हर मोड़ पर सफल रहें और उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। यही कारण है कि प्राथमिक शिक्षक को बच्चों का समग्र विकास करने वाला कहा जाता है। जैसे—

शिष्टाचार— शिक्षक बच्चों को बुनियादी शिष्टाचार सीखने में सक्षम बनाते हैं, जैसे बड़ों का सम्मान करना, अपने साथियों के साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार करना और सामाजिक रूप से स्वीकार्य व्यवहार विकसित करना।

शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों के आचरण में यदि कोई कदाचार है तो उसे सुधारना होगा।

बच्चों के बीच सहयोग— एक मैत्रीपूर्ण और सहायक शिक्षण वातावरण को बढ़ावा देते हुए, शिक्षक प्रोत्साहित करते हैं और सुनिश्चित करते हैं कि जब भी आवश्यकता हो, बच्चे एक साथ काम करें। बच्चों को समूह या टीम के रूप में काम करने के महत्व और लाभों के बारे में सिखाया जाता है।

आत्म-सम्मान और आत्मविश्वास— अपने विकास के चरण में, बच्चों को स्वयं से प्रेम करना सीखना चाहिए। उन्हें अपने पहनावे पर गर्व होना चाहिए। अपने बारे में अच्छा महसूस करने से उनका आत्मविश्वास बढ़ता है। शिक्षक, सफल होने के अवसर प्रदान करके, बच्चों में आत्म-सम्मान और आत्मविश्वास पैदा करते हैं।

जिज्ञासा को बढ़ावा देना— एक महत्वपूर्ण पहलू जो बच्चों को रुचि के साथ सीखने में सक्षम बनाता है वह नई वस्तुओं के प्रति उनकी जिज्ञासा है। बच्चे जीवन में लगातार नई परिस्थितियों का सामना करते है और नए कौशल हासिल करते है। शिक्षक एक बाल-केंद्रित कक्षा चलाते हैं, बच्चों को प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, यह सुनिश्चित करते हैं कि उन्हें सही उत्तर मिले और उनकी शंकाएँ दूर हो जाएँ।

सत्यनिष्ठा और ईमानदारी पैदा करना— बुनियादी और महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक जिसे बच्चों द्वारा प्राप्त किया जाना चाहिए, ईमानदारी और सत्यनिष्ठा ऐसे गुण हैं, जो न केवल बच्चों को सक्षम वयस्कों में परिपक्व बनाते हैं, बल्कि भविष्य के समाज की भलाई भी सुनिश्चित करते हैं। यह प्राथमिक शिक्षक ही है, जो जीवन में प्रारंभिक सीखने के चरण के दौरान बच्चों में ऐसे महान गुण प्रदान करता है।

दायित्व लेना— बच्चों के बीच एक और वांछनीय और महत्वपूर्ण गुण, जो शिक्षकों द्वारा विकसित किया जाता है, वह है उनके साथ-साथ दूसरों के लिए भी उत्तरदायी होना। जीवन के सभी चरणों में विभिन्न गतिविधियों में जवाबदेही तभी प्राप्त की जा सकती है, जब बच्चों को उनके उभरते वर्षों के दौरान इन गुणों के साथ पोषित किया जाए। बेशक, शिक्षक ही हैं जो इसे संभव बनाते हैं।

शिक्षक तीसरे माता-पिता की भूमिका में— खास विमर्श

बाल विकास में प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों का योगदान महत्वपूर्ण है। प्रारंभिक वर्षों में बच्चे के अनुभव ही उसे उस विशिष्ट व्यक्ति के रूप में आकार देते हैं, जो आगे जाकर वह बनते हैं। शिक्षक यह पता लगाने में बड़े स्तर पर सहायता करते हैं कि वे किस दिशा की ओर बढ़ते हैं। बच्चों के जीवन का एक बड़ा हिस्सा होने और उनके साथ सीखने का अधिकतम समय बिताने के कारण, शिक्षक बच्चों के साथ लगभग माता-पिता के रिश्ते विकसित करते हैं। जीवन की अधिकांश वस्तुओं की तरह, एक शिक्षक की भूमिका भी समय के साथ बदलती रहती है। पहले के समय में, शिक्षक शिक्षण के एक निश्चित पैटर्न का पालन करते हुए पाठ्यक्रम सामग्री और निर्देशों का एक स्पष्ट सेट जारी करते थे। आधुनिक विश्व में यह अब कोई प्रभावी दृष्टिकोण नहीं रह गया है। आज, स्कूलों में प्राथमिक

विद्यालय के शिक्षक समकालीन दुनिया की माँगों और आवश्यकता के अनुरूप विभिन्न भूमिकाएँ निभाते हैं। बच्चों के जीवन में प्राथमिक शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, क्योंकि वे उन्हें बुनियादी पाठ पढ़ाते हैं, जो उनके शैक्षणिक विकास का मार्गदर्शन करते हैं। कुछ कौशल आवश्यक हैं, जिनसे शिक्षक बच्चों को प्रभावी ढंग से सीखने में मदद करते हैं।

प्राथमिक शिक्षक शिक्षण कौशल

एक शिक्षक के रूप में काम करते समय शिक्षण कौशल महत्वपूर्ण हैं। ये कौशल एक शिक्षक को अपनी कक्षा को सीखने में व्यस्त रखने और रुचि बनाए रखने में मदद करते हैं। सबसे वांछनीय शिक्षण कौशल को जानने के साथ-साथ आप उन्हें कैसे उजागर कर सकते हैं, यह जानने से आपको एक ऐसी शिक्षण प्रक्रिया ढूँढ़ने में मदद मिल सकती है, जिसका आप आनंद लेते हैं। शिक्षण कौशल ऐसे कठोर और कोमल कौशल हैं, जिनके प्रयोग से एक शिक्षक बच्चों को व्यस्त रखने में मदद करते हैं। ये कौशल शिक्षकों को अपने बच्चों का ध्यान और सम्मान अर्जित करते हुए खुद को एक शिक्षक के रूप में स्थापित करने में भी सहायता कर सकते हैं। कुछ शिक्षण कौशल स्वाभाविक रूप से कुछ को आते हैं, जबकि अन्य को अभ्यास के साथ विकास की आवश्यकता हो सकती है। शिक्षण कौशल विकसित करना एक अच्छा शिक्षक बनने का एक विशिष्ट हिस्सा है। इसी तरह प्राथमिक शिक्षक कौशल भी खास महत्वपूर्ण हैं। इन कौशलों को विकसित करके आप बच्चों से जुड़ सकते हैं और उनके शैक्षिक अनुभव को बेहतर बना सकते हैं। आगे हम प्रकाश डालने की कोशिश करेंगे कि प्राथमिक शिक्षक कौशल क्यों महत्वपूर्ण हैं, एक प्राथमिक विद्यालय शिक्षक क्या करता है और कौन-से कौशल हैं, जो शिक्षकों और उनके विद्यार्थियों को सफल होने में सहायता कर सकते हैं। इस बात को बेहतर तरीके से समझने के लिए सभी बिंदुओं को समझना आवश्यक है।

प्राथमिक शिक्षक शिक्षण कौशल क्यों महत्वपूर्ण हैं?

प्राथमिक शिक्षक शिक्षण कौशल महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि वे शिक्षकों और उनके विद्यार्थियों को लाभान्वित करते हैं। कुछ शिक्षण कौशल शिक्षकों के लिए अपने विद्यार्थियों के साथ संवाद करना और उन्हें समझना आसान बनाते हैं, जिससे बच्चों की सीखने की क्षमता में सहायता मिलती है। यह उन्हें प्रश्न पूछने, अकादमिक चर्चा करने और रचनात्मक आलोचना स्वीकार करने का आत्मविश्वास भी दे सकते हैं, जो उन्हें बेहतर बनाने में सहायता कर सकता है। इससे शिक्षकों को लाभ होता है, क्योंकि वे अक्सर अपनी सफलता इस बात से मापते हैं कि उनके विद्यार्थी कितना अच्छा प्रदर्शन करते हैं। जब शिक्षक कक्षा में अच्छा प्रदर्शन करते हैं, तो उन्हें अधिक कार्य संतुष्टि और सुरक्षा प्राप्त हो सकती है।

आवश्यक कौशल रखने वाले शिक्षकों को नियुक्त करने से भी स्कूलों को लाभ हो सकता है। स्कूल प्रशासक ऐसे उम्मीदवारों की तलाश कर सकते हैं जिनके पास ये कौशल हों, क्योंकि वे नौकरी के लिए उम्मीदवार की उपयुक्तता का प्रतिनिधित्व करते हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षक स्कूलों के लिए एक आवश्यक मानवीय संसाधन हैं, क्योंकि बच्चों को अकादमिक

रूप से उत्कृष्टता प्राप्त करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

प्राथमिक शिक्षक के मुख्य उत्तरदायित्व

प्राथमिक शिक्षक अपने कौशल का उपयोग कई दैनिक कार्यों को पूरा करने के लिए करते हैं। निर्देश के अलावा, शिक्षकों का दायित्व विद्यार्थियों से संबंधित जानकारी तैयार करने, व्यवस्थित करने और रिकॉर्ड करने का है। उनके कार्य, उनके पढ़ाए जाने के स्तर के आधार पर भिन्न-भिन्न होते हैं, लेकिन यहाँ प्राथमिक विद्यालय शिक्षक के कुछ सामान्य कर्तव्य हैं—

- आयु-उपयुक्त पाठ्यक्रम के आधार पर पाठ योजनाएँ बनाना;
- अनेक विषय क्षेत्रों के लिए पाठ कार्यक्रम की योजना बनाना;
- स्पष्ट अनुदेशात्मक पाठ प्रदान करना;
- कार्य और परीक्षाएँ सौंपना और स्कोर करना;
- बच्चों की प्रगति और अंकों का रिकॉर्ड रखना;
- बच्चों को उनके पाठों या असाइनमेंट्स के बारे में प्रश्नों में मदद करना;
- बच्चों की चिंताओं के बारे में अभिभावकों से संवाद करना;
- स्कूल के उद्देश्यों तक पहुँचने के लिए कर्मचारियों के साथ काम करना;
- पाठ्येतर गतिविधियों का आयोजन और पर्यवेक्षण करना;

प्राथमिक शिक्षक के लिए महत्वपूर्ण कौशल

ऐसे कई कौशल हैं, जिन्हें आप विकसित कर सकते हैं, जो आपको एक सफल प्राथमिक विद्यालय शिक्षक बनने में सक्षम बना सकते हैं—

सीखने के अवसर देना

प्राथमिक शिक्षक बच्चों को उनके ज्ञान और कौशल को विकसित करने में सहायता करने के लिए निर्देश और विषय पाठ देते हैं। चाहे आप एक-पर-एक ट्यूशन सत्र या कक्षा चर्चा आयोजित करें, अपने बच्चों को सीखने के लिए ग्रहणशील बनाने में सहायता करने के लिए उचित संचार का उपयोग करना महत्वपूर्ण है। उत्कृष्ट शिक्षण कौशल वाले शिक्षक जानकारी प्रस्तुत करने के विभिन्न तरीकों से परिचित हैं, जिनमें प्रस्तुतियाँ, चर्चाएँ, चिंतनशील गतिविधियाँ और खेल शामिल हो सकते हैं। बच्चों की सीखने की क्षमताएँ और प्राथमिकताएँ अलग-अलग होती हैं, लेकिन अपने बच्चों के सीखने के व्यवहार को समझने से आपको अपने निर्देश देने का एक प्रभावी तरीका निर्धारित करने में सहायता मिल सकती है। इन सबके आधार पर बच्चों के लिए एक प्रभावी अधिगम परिवेश तैयार करना आवश्यक है।

एक कुशल प्राथमिक शिक्षक यह भी जानता है कि वाक्यांशों, कहानियों और रूपकों का उपयोग कैसे किया जाए जो बच्चों पर स्थायी प्रभाव डालते हैं। पाठों को मनोरंजक और प्रासंगिक बनाने के लिए कहानी कहने की तकनीकों का उपयोग करने से बच्चों को पाठों में अधिक रुचि हो सकती है और उन्हें शैक्षणिक रूप से सुधार करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। आप बच्चों को ऐसे संसाधन ढूँढ़ने में सहायता करके अनुसंधान कौशल विकसित करने में भी मदद कर सकते हैं, जो उनके ज्ञान और कौशल को विकसित करने में सहायता कर सकते हैं, जैसे— पुस्तकें, वेबसाइट्स, सॉफ्टवेयर और विशेषज्ञों या अतिथि वक्ताओं तक पहुँच।

सक्रिय श्रवण

अपने आप में एक महत्वपूर्ण शिक्षण कौशल होने के अलावा, अन्य प्रकार के शिक्षण कौशल के निर्माण के लिए सक्रिय सुनना भी आवश्यक है। यदि आप अपने विद्यार्थियों की बात अच्छी तरह से सुन सकते हैं, तो आप उन्हें दिखा सकते हैं कि आप उनकी परवाह करते हैं और उनकी चिंताओं को समझते हैं। इससे उन्हें महसूस हो सकता है कि आपको उनके ज्ञान और कौशल को बेहतर बनाने में मदद करने में सच्ची रुचि है, जो उन्हें सीखने के लिए प्रेरित कर सकता है और आप पर उनका विश्वास बढ़ा सकता है।

एक सक्रिय श्रोता होने से आपको अपने विद्यार्थी की क्षमता और सीखने की इच्छा की बेहतर समझ हासिल करने में भी मदद मिलती है। इस ज्ञान के साथ, आप अपनी शिक्षण विधियों को व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप अनुकूलित कर सकते हैं, जिससे अधिक प्रभावी शिक्षण हो सकता है। अपने विद्यार्थियों को आश्वस्त रखें। याद रखें कि आप उनकी बात ध्यान से सुन रहे हैं। जब वे बोल रहे हों तो संक्षिप्त, उत्साहवर्धक प्रतिक्रियाएँ दें, ताकि ऐसा लगे कि आप वास्तव में रुचि रखते हैं। आप यह दिखाने के लिए कुछ विचारों या टिप्पणियों पर प्रतिक्रिया दे सकते हैं कि आपने उनके संदेशों को स्पष्ट रूप से समझ लिया है या आप उनके विचारों को उनके पास दोहरा सकते हैं और पूछ सकते हैं कि क्या आपने सही ढंग से समझा है।

विश्वास का निर्माण

जब आप अपने विद्यार्थियों के साथ विश्वास बनाते हैं, तो वे आपसे सीखने के लिए अधिक प्रेरित महसूस कर सकते हैं। उन्हें यह दिखाकर कि उन्हें सीखने में सहायता करने में आपकी सच्ची रुचि है, आप खुद को अधिक सुलभ बना सकते हैं और एक ऐसा वातावरण बना सकते हैं, जो सम्मान, आराम और सीखने की सुविधा प्रदान करता है। विश्वास बनाने में समय लगता है, लेकिन आप अधिक तेजी से विश्वास बनाने में सहायता के लिए कुछ कदम उठा सकते हैं। इन उपायों में शामिल हैं—

- आपके विद्यार्थी की ओर से आपके साथ साझा की गई गोपनीय जानकारी को गुप्त रखें, जब तक कि वे जोखिम में न हों;
- आप उनसे जो वादे करते हैं, उन्हें पूरा करें;
- उनकी शारीरिक और भावनात्मक सीमाओं का सम्मान करना;
- दोपहर के भोजन के समय या यदि आप उन्हें स्कूल के कार्यक्रमों में देखें तो उन्हें नमस्ते कहें;
- अपनी गलतियों को स्वीकार करना और उन्हें सुधारने का दायित्व लेना;
- यदि आप किसी बात पर उनसे असहमत हैं तो उन्हें चतुराई से बताएँ और कारण बताएँ।

प्रोत्साहन

अपने विद्यार्थियों को वास्तविक प्रोत्साहन देने की क्षमता होना एक उत्कृष्ट शिक्षक के सबसे आवश्यक कौशलों में से एक है। यदि आप अपने विद्यार्थियों को प्रोत्साहित कर सकते हैं, तो आप उन्हें सीखने में ध्यान केंद्रित और रुचि रखने में मदद कर सकते हैं। कुछ विद्यार्थियों को चुनौतियों और बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है, जो उनके प्रेरणा स्तर पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं, खासकर यदि वे अपने साथियों की तुलना में अलग गति से सीखते हैं।

प्रोत्साहन प्रदान करके, आप उन्हें इन बाधाओं को दूर करने और खुद में सुधार जारी रखने के लिए आवश्यक आत्मविश्वास प्राप्त करने में सहायता कर सकते हैं।

जब आपके विद्यार्थी नए ज्ञान या कौशल की सफल उपलब्धि का प्रदर्शन करते हैं तो आप उन्हें मान्यता और सकारात्मक प्रतिक्रिया देकर प्रोत्साहित कर सकते हैं। जब वे सीखने में बाधाओं का सामना करते हैं, तो उनका ध्यान उनके सकारात्मक गुणों और सिद्ध क्षमताओं की ओर आकर्षित करें, ताकि उन्हें विश्वास हो कि वे उन बाधाओं को पार कर सकते हैं। इससे उन्हें अपना आत्मविश्वास बनाने में मदद मिलती है, ताकि वे फिर से प्रयास करने और अपने लक्ष्यों की दिशा में काम करने में अच्छा महसूस करें।

सुधारात्मक प्रतिक्रिया प्रदान करना

सुधारात्मक प्रतिक्रिया या रचनात्मक आलोचना महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे बच्चों को यह सीखने में सहायता मिलती है कि वे शैक्षणिक रूप से बेहतर प्रदर्शन करने के लिए कहाँ सुधार कर सकते हैं। चतुराई से सुधारात्मक प्रतिक्रिया देने की क्षमता एक कौशल है और जो शिक्षक इस कौशल को विकसित करते हैं, उनके लिए बच्चों के साथ बातचीत करना और उन्हें सफल होने में सहायता करना सरल हो सकता है। बच्चों को सहायक आलोचना स्वीकार करना चुनौतीपूर्ण लग सकता है, लेकिन इसे इस तरह से प्रस्तुत करना, जिससे वे स्वीकार करते हैं और प्रोत्साहन पाते हैं, सकारात्मक बदलाव ला सकता है। बच्चों के लिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि वे अलग तरीके से क्या कर सकते हैं और कैसे कर सकते हैं। आप बच्चों को फीडबैक इस प्रकार प्रदान कर सकते हैं—

- चिंता के बारे में धीरे से लेकिन सीधे तौर पर बात करना;
- समस्या को तुरंत हल करने का एक तरीका प्रदान करना;
- समस्या को हल करने के लिए विभिन्न तरीकों की व्याख्या करना और बच्चों को तरीके खोजने के मौके देना;
- उन्हें यह दिखाना कि कार्य को सही ढंग से कैसे निष्पादित किया जाए;
- प्रतिक्रिया देते समय सकारात्मक शब्दों और लहजे का उपयोग करना;
- जितनी जल्दी हो सके प्रतिक्रिया प्रदान करें, ताकि बच्चों को कार्य हल करने में आसानी हो;
- बच्चों को निजी तौर पर फीडबैक देना;
- यदि बच्चों को कार्य को समझने में सहायता की आवश्यकता हो तो उन्हें प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करना;
- उन बच्चों की प्रशंसा करना जो सकारात्मक परिवर्तन करने के लिए आपकी प्रतिक्रिया का उपयोग करते हैं।

योजना

योजना बनाना, सबसे महत्वपूर्ण शिक्षण कौशलों में से एक है, क्योंकि पाठ अक्सर संचयी होते हैं। शिक्षक बुनियादी अवधारणाओं से शुरुआत करके और धीरे-धीरे अधिक जटिल विषयों को पढ़ाकर बच्चों को सीखने में सहायता करते हैं, इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि वे किसी निश्चित विषय पर बच्चों को निर्देश देते समय सबसे बुनियादी स्तर से आरंभ करें। तदनुसार पाठों की योजना बनाने से उन्हें यह सुनिश्चित करने में मदद मिल सकती है कि बच्चों

को सही समय पर सही जानकारी मिल सके, जो उन्हें प्रभावी ढंग से सीखने में सक्षम बनाती है। बच्चों के पास ऐसे बेंचमार्क या मानक हो सकते हैं, जिनसे स्कूल उनसे निश्चित समय पर सीखने की अपेक्षा करता है, और नियोजन शिक्षकों को समय पर निर्देश प्रदान करने की अनुमति देता है।

नियोजन कौशल होने से शिक्षकों को उन बच्चों को पाठ प्रदान करने में भी सहायता मिल सकती है, जिनकी अलग-अलग आवश्यकताएँ हैं और वे अलग-अलग गति से काम करते हैं। वे उन बच्चों के लिए अधिक उन्नत कार्य तैयार कर सकते हैं जो तेजी से सीखते हैं और लगातार अच्छा प्रदर्शन करते हैं जबकि उन बच्चों के लिए अतिरिक्त सहायता प्रदान करते हैं जिन्हें अधिक ध्यान देने की आवश्यकता होती है। प्रत्येक बच्चे की योग्यता स्तर और उनके द्वारा विकसित किए जा रहे कौशल की पहचान करने से आपको योजना प्रक्रिया को प्रभावी ढंग से अपनाने में सहायता मिल सकती है। फिर आप प्रत्येक बच्चे के लिए उनकी प्रगति के आधार पर लक्ष्य निर्धारित कर सकते हैं और उनकी क्षमताओं और आवश्यकताओं के बारे में अपने ज्ञान का उपयोग करके अनुकूलित पाठ योजनाएँ बना सकते हैं, जो उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप हों और उन्हें सफल होने में सहायता करें।

शिक्षण कौशल को कैसे सुधारें?

अच्छे शिक्षक लगातार अपने कौशल में सुधार कर रहे हैं। आप निम्नलिखित चरणों से अपने शिक्षण कौशल में सुधार कर सकते हैं—

- सबसे पहले, अपनी शक्तियों को पहचानें— सबसे पहले अपने शिक्षण कौशल के संबंध में अपनी शक्तियों को जानना सहायक हो सकता है। आप इन शक्तियों का उपयोग उन क्षेत्रों के विकास में सहायता के लिए कर सकते हैं, जिनमें आप सुधार करना चाहते हैं।
- दूसरा, उन आवश्यक शिक्षक कौशलों की एक सूची बनाएँ, जिन्हें आप सुधारना चाहेंगे— अब, उन शिक्षकों के कौशलों की एक सूची बनाएँ, जिन्हें आप आगे विकसित करना चाहते हैं। ये ऐसे कौशल हो सकते हैं, जिनका आपको कम अनुभव है या जिन्हें कक्षा में लागू करना आपके लिए सबसे कठिन है।
- फिर, इन कौशलों को सुधारने के विशिष्ट तरीकों की पहचान करें— सूचीबद्ध प्रत्येक शिक्षण कौशल के लिए, उन विशिष्ट तरीकों पर विचार करें, जिनसे आप उन्हें सुधार सकते हैं, उदाहरण के लिए— यदि आप अधिक संगठित होना चाहते हैं, तो आप अपने जीवन के अन्य क्षेत्रों में अपने संगठन को बेहतर बनाने का प्रयास कर सकते हैं। यदि आप एक बेहतर नेता बनना चाहते हैं, तो आप स्कूल के बाद के समूह में नेतृत्व की स्थिति के लिए स्वेच्छा से काम कर सकते हैं।
- निर्धारित करें कि आप कौशल के विकास को कैसे मापेंगे— अच्छे लक्ष्य स्मार्ट लक्ष्य हैं, जो ऐसे लक्ष्य हैं जो विशिष्ट, मापने योग्य, कार्रवाई योग्य और यथार्थवादी हैं। निर्धारित करें कि आप प्रत्येक कौशल के विकास को कैसे मापेंगे, साथ ही एक समयरेखा भी निर्धारित करें कि आप प्रत्येक कौशल को वास्तविक रूप से पूरा करने की कितनी देर तक उम्मीद कर सकते हैं।

कौशल में सुधार करने में समय और अभ्यास लगता है, इसीलिए कुछ कौशलों के विकास की दिशा में अपनी प्रगति का अवलोकन बहुत महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

शिक्षक, निस्संदेह हमारे समाज के सबसे महत्वपूर्ण सदस्य हैं। वे बच्चों को उद्देश्य देते हैं, उन्हें हमारी दुनिया के नागरिक के रूप में सफलता के लिए तैयार करते हैं, उन्हें जीवन में अच्छा करने और सफल होने के लिए प्रेरित करते हैं। आज के बच्चे कल के नागरिक हैं और शिक्षक वह महत्वपूर्ण बिंदु हैं, जो एक बच्चे को उसके भविष्य के लिए तैयार करते हैं। बच्चों को छोटी उम्र में जो सिखाया जाता है, उसे वे जीवन-भर निभाते हैं। उन्होंने जो सीखा है उसका उपयोग समाज को प्रभावित करने के लिए करेंगे। हर कोई जानता है कि आज का युवा कल का नागारिक बनेगा। शिक्षकों के पास युवाओं को उनके सबसे प्रभावशाली वर्षों में शिक्षित करने की सुविधा है, चाहे वह प्री-स्कूल हो या उसके आगे की कक्षाएँ। शिक्षकों में समाज के लिए सकारात्मक और प्रेरित भावी पीढ़ियों के निर्माण के लिए भविष्य के नेताओं को सर्वोत्तम तरीके से आकार देने की क्षमता होती है और इसलिए वे स्थानीय और वैश्विक दोनों स्तरों पर समाज का निर्माण करते हैं। शिक्षकों को एक यादगार शैक्षिक प्रभाव पैदा करने का काम सौंपा गया है और इसके लिए विभिन्न प्रकार के कौशल की आवश्यकता होती है। इनमें से कई कौशल अपरिहार्य हैं, चाहे वे किसी भी प्रकार के शिक्षण करियर में शामिल हों। इसके लिए समय-समय पर उनका विशेष प्रशिक्षण अनिवार्य शर्त है।

संदर्भ

कुरोयानागी, तेत्सुको. 2017. *तोत्तो चान*. अनुवादक– पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा. राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत.

कृष्णमूर्ति, जिद्दू. 2001. *ऑन एजुकेशन*. कृष्णमूर्ति फाउंडेशन ऑफ अमेरिका, कैलिफोर्निया.

ग्रीनबर्ग, डैनियल. 2014. *अब हम आजाद हैं*. अनुवादक– पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा. एकलव्य प्रकाशन, भोपाल, मध्य प्रदेश.

नील, ए.एस. 2011. *समरहिल*. अनुवादक– पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा. एकलव्य प्रकाशन, भोपाल, मध्य प्रदेश.

बधेका, गिजुभाई. 1988. *दिवास्वप्न*. उत्तर प्रदेश बाल कल्याण समिति, मोती महल, लखनऊ.

रा.शै.अ.प्र.प. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.

सिसोदिया, मनीष. 2019. *शिक्षा— माई एक्सपेरिमेंट्स एज एन एजुकेशन मिनिस्टर*. पेंगुइन, दिल्ली.

होल्ट, जॉन. 2006. *असफल स्कूल*. अनुवादक– अरविंद गुप्ता. एकलव्य प्रकाशन, भोपाल, मध्य प्रदेश.

———. 2008. *बचपन से पलायन*. अनुवादक– पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा. एकलव्य प्रकाशन, भोपाल, मध्य प्रदेश.

———. 2009. बच्चे *असफल कैसे होते हैं?* अनुवादक– पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा. एकलव्य प्रकाशन, भोपाल, मध्य प्रदेश.